डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम संपन्न

शायरी में शब्द चित्रता ज़रूरी – अर्जुन चावला

नई दिल्ली। 20 मई 2022, साहित्य अकादेमी ने आज प्रतिष्ठित सिंधी कवि, कथाकार, अनुवादक और समालोचक अर्जुन चावला के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें उन्होंने अपनी जीवन–यात्रा और अपनी रचना–यात्रा के अनुभवों को श्रोताओं से साझा किया। 10 फ़रवरी 1931 को काशमोर, जैकोबाबाद (अब पाकिस्तान में) में जन्में अर्जुन चावला सिंधी भाषा के अलावा हिंदी, उर्दू, फारसी, पंजाबी, सरायकी और अंग्रेज़ी के भी अच्छे ज्ञाता हैं। विभाजन के बाद आप पाँच साल पाकिस्तान में रहे और 1952 में अपने परिवार के साथ भारत आ गए और उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में बस गए। आपकी पहली कहानी – 'पहज' 1960 में 'हिंदवासी' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी, जिसे सिंधी पाठकों ने बेहद पसंद किया था। आपने पूरे देश में आयोजित होने वाले मुशायरों में सहभागिता की और अपनी ग़ज़लों और गीतों के लिए संगीत भी तैयार किया। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने श्रोताओं को अपनी कई ग़ज़लें सुनाईं। इस दौरान उन्होंने कहा कि अच्छी शायरी में शब्द चित्रों का होना बेहद ज़रूरी है। शायरी का यही गुण उसे कालजयी बनाता है।

उन्होंने अपने बाल विवाह से लेकर अपनी शिक्षा और शिक्षक के रूप में अपने कार्य जीवन के कई संस्मरण भी श्रोताओं से साझा किए। ज्ञात हो कि एक कुशल अनुवादक के रूप में चावला जी ने कई सुंदर अनुवाद किए और उल्लेखनीय साहित्यिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

अपने कविता–संग्रह 'नेना निंदाखरा' के लिए आपको साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2021 प्राप्त हुआ। उनकी कविताएँ मानवता और प्रकृति के प्रति उनकी तीव्र प्रतिक्रिया का प्रतीक हैं। जून 1991 में अर्जुन चावला एमपी एजुकेशनल सर्विस से प्राचार्य के पद से सेवानिवृत्त हुए। 92 वर्ष की आयु में आपने अपनी दुर्लभ सर्जनात्मक और मानवतावादी अंतर्दृष्टि के साथ, अपनी उर्वर कल्पना और भाषा के प्रति गहरी प्रतिबद्धता को जीवित रखते हुए, दुनिया को विशेष गरिमा से देखते हुए अपना लेखन जारी रखा है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अंगवस्त्रम एवं साहित्य अकादेमी की पुस्तक भेंट कर उनका स्वागत किया। कार्यक्रम में वीना शृंगी, मोहनी हिंगोरानी, मोहन गेहानी, मोहन हिमथाणी, मीनू प्रेमचंदानी, जयेश शर्मा, विक्रमजीत एवं जवाहर बोलवानी सहित बड़ी संख्या में सिंधी रचनाकार और पाठक उपस्थित थे।

(के. श्रीनिवासराव)